कल की बहुत सी फिल्में के साथ दिखाती है इसलिए आज भी अच्छे फिल्मकार अपनी राष्ट्रीय सामाजिक चेतना से अलग होकर काम–करना पसंद नहीं करते और जो इससे हटकर केवल सेक्स और ग्लैमर पर जोर देते हैं उनकी बहुत बजट की फिल्मों की चर्चा भी अधिक दिनों तक नहीं होती है। लोग उसे भूल जाते हैं ।

''''''''''''

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. संस्कृति के चार अध्याय, रामधारी सिंह दिनकर, पृष्ठ–710
2. हिन्दी सिनेमा का इतिहास, मनमोहन चड्ढा, पृष्ठ–204
3. संस्कृति के चार अध्याय, पृष्ठ–717
4. भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, पृष्ठ–175
5. हिन्दी सिनेमा का इतिहास, पृष्ठ–211
6. गाँधी एक जीवनी, पृष्ठ –138
7. हरिजन, पृष्ठ–17
8. सिनेमा और साहित्य, विजय अग्रवाल, पृष्ठ–5

मगध प्रमण्डल पर्यटन उद्योग में संभावनाएँ

मुकेश कुमार*

प्रो० (डॉ०) शिव शंकर गुप्ता**

सारः–पर्यटन उद्योग का मुख्य तात्पर्य किसी भी पर्यटन स्थान पर आए पर्यटकों को सुविधा प्रदान कर उनसे आय प्राप्त करना है। भारतीय पर्यटन उद्योग मुख्यतः तीन प्रकार के पर्यटन स्थल स्थल पर निर्भर हैः धार्मिक, प्राकृतिक, एवं ऐतिहसिक, मेरे विषय बिहार पर्यटन उद्योग की वर्तमान स्थितिः मगध प्रमण्डल के संदर्भ में अध्ययन हेतु किया गया। इस संदर्भ में बिहार स्टेट टूरिज्म डेवलप्मेंट कॉरपोरेशन द्वारा आंकड़ों को एकत्रित कर वर्तमान पर्यटन उद्योग विकास की सूचीबद्ध अध्ययन प्राप्त कर विश्लेषण किया गया।

कुंजिका : पर्यटन उद्योग, मगध प्रमंडल, पर्यटक, आय एवं बिहार।

परिचयः पर्यटन का अर्थ विशिष्ट प्रकार के खेल एवं मनोरंजन के रूप में है। पर्यटन एक मानवीय क्रियाकलाप है, जिसके द्वारा आर्थिक, सामाजिक, राजीतिक, सांस्कृतिक, अथवा शैक्षिक दृष्टिकोण से भी आकलन किया जा सकता है। पर्यटन द्वारा किसी भी देश में जहाँ अच्छी जलवायु, खनिज, बालू तथा विदेशी संस्कृति इत्यादि नहीं रहने पर भी इसके लाभ उन स्थानों के लिए विकास; हेतुः मुद्रा कमाने के लिए किया जाता रहा है। विश्व के विदेशी व्यापार में पर्यटन का एक बड़ा महत्व है। यह भुगतान शेष में एक मूल तत्व है, जिसके कारण इस उद्योग में तीव्र गति से विकास होता चला आ रहा है। पर्यटन उद्योग संपत्ति तथा रोजगार उत्पन्न करने का भी एक व्यापक साधन है। जिसके द्वारा न केवल उद्योगों में सफलता मिलती है, अपितु रोजगार का भी अवसर प्राप्त होता है।

बिहार के पर्यटन उद्योग के संबंध में एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि रखता है। बिहार में कई ऐसे ऐतिहासिक धरोहर है, जिनका संबंध ना केवल मानवता हेतु बल्कि पौराणिक सभ्यता का विकास भी इस क्षेत्र में देखने को मिलता है। एक ओर जहाँ नालंदा का खण्डहर है, जोकि बौद्ध पर्यटक है यहाँ प्रतिवर्ष बौद्धपर्यटक आते हैं तथा धर्म इतिहास एवं इससे जुड़े तथ्यों का अध्ययन करते हैं। इसके अतिरिक्त पर्यटक बिहार को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को ज्ञान के रूप में अर्जित करते हैं।

जहाँ तक मगध प्रमंडल का विषय है, पर्यटन उद्योग में यह क्षेत्र अपनी अलग योग्यता रखता है। यहाँ की जलवायु, आस्था, भगवान् विष्णु तथा बौद्ध के

***शोद्यार्थी (एम०कॉम०)**

****संकाय एवं वाणिज्य विभाग मगध विश्वविद्यालय बोधगया, बिहार**

संदर्भ में आस्था से जुड़े आयामों का दृष्टिगोचर होता है, जिसके द्वारा बिहार पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बना रहा है। राज्य में जहाँ 1980 में 28, 1598 भारतीय एवं 19,976 विदेशी यात्री का आवागमन हुआ था। वहीं वर्ष 1991 में इनकी संख्या बढ़कर क्रमशः 20, 73, 553 एवं 80, 827 विदेशी हो गई है वहीं वर्ष 2008 में पर्यटकों की संख्या 1.22 करोड़ थी। तथा वर्तमान में निरंतर पर्यटकों की संख्या में उन्नति हुई है अनुमानिक है कि वर्ष 2018–19 में पर्यटकों की संख्या लगभग 2.38 करोड़ पार कर चुकी है, जिसको देखते हुए नीतिश सरकार द्वारा पर्यटक को निरंतर बढ़ावा दिया जा रहा है। ज्ञात हो कि पर्यटक को सरकार द्वारा वर्ष 1987 से एक उद्योग के रूप मे मान्यता दी जा चुकी है, तथा बिहार समुचित विकास के लिए सातवीं पंचवर्षीय योजना अवधि में 958 लाख रूपये काव्य का प्रावधान किया गया था।

बिहार स्टेट टूरिज्म डेवलप्मेंट कॉरपोरेशन का गठन करके राज्य सरकार ने पर्यटन उद्योग को विकास एवं प्रचार के निमित्त विभिन्न कार्य संपन्न भी किए गए हैं। विभिन्न प्रांत के सेनानियों को आकर्षित करने एवं राज्य के पर्यटन स्थलों के संबंध में जानकारी प्राप्त करने हेतु बिहार राज्य एवं बाहरी राज्य में पर्यटन सूचना केंद्र संचालित किए गए। इसके लिए अंगतुक सैलानियों को आवासीय सुविधा उपलब्ध कराने के लिए पर्यटन होटल, धर्मशाला, पर्यटक बंगला, राज्य पर्यटन विकास निगम द्वारा संचालित किए जा रहे हैं। पर्यटकों को परिवहन की सुविधा हेतु निगम द्वारा कई डीलक्स बसें, मिनी बसें, भी मुहैया कराई जाती रही है। विशेष तौर पर भी होटलों में मेहमान का खानपान पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

पर्यटन उद्योगः–बिहार अपनी ऐतिहासिक गौरव संस्कृति विविधता और प्राकृतिक सुंदरता के कारण पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बना रहा है। यहाँ एक और राजगीर, वैशाली, गया, पाटलिपुत्र, सासाराम, रोहतास जैसे ऐतिहासक स्थल हैं; तो दूसरी ओर बोधगया, बिहारशरीफ और पटना साहेब के पावन तीर्थ स्थल हैं। यह एक ऐसा राज्य भी है जहाँ सभी धर्मों को मानती और और परंपरा है विलक्षण, रीति–रिवाज, समृद्ध संस्कृति एवं सामाजिक जीवन पद्धति, नीले त्यौहार आदि, सदियों से देशी और विदेशी सैलानियों को आकर्षित करते आ रहे हैं।

देश के कुछ अन्य राज्यों के भांति इस राज्य में भी अभी हाल तक पर्यटन आय का स्रोत नहीं समझा जाता था, लेकिन अब इसे सरकार द्वारा उपयुक्त मान्यता दी जापे के उपरांत राज्य की आमदनी एवं यहाँ के निवासियों के रहन–सहन के स्तर में वृद्धि करने वाले महत्वपूर्ण कारक के रूप में इसकी भूमिका स्वीकार किया जाने लगा है।

ज्ञात हो कि जापानी सरकार राज्य की के बौद्ध स्थल के विकास हेतु आर्थिक सहायता भी दी जा रही है, और इसके माध्यम से कुछ बृहद योजनाओं

का क्रियान्वयन भी हुआ है। राज्य सरकार पर्यटक को उत्तम आवासीय सुविधा उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न स्थलों पर होटल का विकास तथा जल विहार द्वारा उनके मनोरंजन के लिए आवश्यक प्रबंधक कर रही है। समय–समय पर पाटलिपुत्र, राजगीर, वैशाली आदि महत्वपूर्ण स्थान पर विशेष उत्सव एवं त्याहारों का आयोजन एवं सोनपुर मेले के अवसर पर सोनपुर पर्यटन ग्राम का स्थापना भी की जाती रही है। वर्तमान राज्य सरकार ने पर्यटन विकस को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान के लिए ''बिहार दृष्टिः पर्यटन क्षमता का उपयोग–एक मध्य विधि परिपेक्ष्य'' हेतु एक संचालन समिति गठित करने का निर्णय लिया गया। जिसके द्वारा उपलब्ध दस्तावेज पर्यटन विकास के लिए एक समेकित दृष्टिकोण भी सूत्रबद्ध करेगा और पर्यटन उद्योग के विकास के लिए दिए प्रोत्साहन की समीक्षा भी करेगा। गत वर्ष भारत सरकार द्वारा बोधगया, राजगीर, नालंदा पर्यटन सर्किट के विकास हेतु 1,833 लाख रूपये की वित्तीय सहायता मंजूरी की है। राज्य में पर्यटन हेतु योजना परिव्यय में लगातार वृद्धि की जा रही है।

पर्यटन भारत में सबसे बड़ा सेवा उद्योग है, जिसका राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पादन में 32.00% और देश में रोजगार में लगभग 9% योगदान है। बिहार में भी पर्यटन के विकास की अपार संभावनाएँ हैं। अपनी समृद्ध ऐतिहासिक विरासत तथा सांस्कृतिक और भौगोलिक देवी–देवताओं, धार्मिक स्थलों आदि के कारण राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन आकर्षित होते हैं। पर्यटन को आर्थिक विकास का इंजन बनाया जा सकता है जिससे व्यवसाय, रोजगार, एवं आय में वृद्धि के साथ आर्थिक समृद्धि हो सकती है।

मगध प्रमंडल पर्यटन स्थलः बिहार के राजधानी पटना से 52 किलोमिटर दक्षिण में गया जिला में फल्गु नदी के किनारे बसा गया शहर, बिहार का प्राचीन नगर है। यहाँ विष्णुपद मंदिर हिंदुओं के पूजनीय तीर्थस्थान जिसका नवनिर्माण इंदौर की रानी अहिल्याबाई ने कराया था। इस मंदिर के प्रांगण में अक्षय वट वृक्ष है जहाँ तीर्थयात्री पिंडदान अर्पित करने हेतु फल्गु नदी में आते हैं, तथा स्नान कर पूर्वजों मोक्ष की प्रार्थना करते हैं। निकट ब्रह्मायोनि पहाड़ी स्थित है जहाँ से शहर का न्यनाभीराम दृश्य देखा जा सकता है। इसी के निकट रामलीला पहाड़ी है प्रमुख पिकनिक स्पॉट है। गया से 25 किलामिटर दूर बराबर की गुफाएँ हैं; जहाँ मौर्यकालीन स्थापना के कुछ आरंभिक उदाहरण है। इस स्थान पर चर्चा सुप्रसिद्ध अंग्रेजी उपन्यास ''ई एम फोस्टर ने पैसेज ऑफ इंडिया'' में किया है। इस स्थान से 20 किलोमीटर की दूरी पर प्रसिद्ध सूर्य मंदिर है, जहाँ प्रत्येक वर्ष नवंबर माह में छठ पूजा संपन्न होती है। गया से 40 किलोमीटर की दूरी पर बराबर गुफाएँ हैं, बौद्ध भिक्षुओं द्वारा पत्थर काटकर इस गुफा का निर्माण तीसरी सदी में किया गया

था। गया में पत्थर काटने की कला भारत भर में प्रसिद्ध है। आज भी पत्थर कटी मोहल्ले में पत्थर की मूर्तियाँ एवं अन्य वस्तुओं का कार्य शिल्प कलाकारों द्वारा किया जाता है।

बोधगया :–ईसा से 500 वर्ष पूर्व बोधगया में ही भगवान् बुद्ध की वट वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ था। यह गया से 15 किलोमीटर की दूरी पर निरंजन नदी के किनारे बसा एक छोटा सा कस्बा है। आज यह विश्व के सभी बौद्ध धर्मावलंबिया का प्रधान तीर्थ स्थल बन गया है महाबोधि मंदिर के प्रांगण में आज भी मूल वटवृक्ष से उगा लिरिक्स उसी स्थल के समीप खड़ा है। कालचक्र के उतार–चढ़ाव का साक्षी है इसके ही समीप रतना घाट में भगवान् बुद्ध ने ध्यान में समय बिताया, आज इसके आसपास तिब्बती मठ है जहाँ बौद्ध धर्म चक्र निरंतर चलता रहता है। पास ही में जापानी, वर्मा, चीन तथा थाईलैंड एवं श्रीलंका द्वारा निर्मित भव्य मंदिर है। यहाँ बिहार में सबसे अधिक विदेशी पर्यटक आते हैं।

नालंदा–नालंदा विश्व का प्राचीन ज्ञान केंद्र है यह पटना से 90 किलोमीटर की दूरी पर है इसकी स्थापना पांचवीं सदी में की गई, तथा चीनी भ्रमण एवं इतिहास युआन चवांग ने यहाँ 12 साल तक छात्र एवं शिक्षक के रूप में व्यतीत किए। यहाँ स्थापित विश्वविद्यालय में तर्क शास्त्र के पंडित दिनागा, ब्राह्मण गुरु धर्मपाल, बौद्ध प्रचारक महायान ने शिक्षण का कार्य किया था। यहाँ 700 वर्षों तक लगातार शिक्षा एवं शिक्षा का कार्य हुआ था तथा 10,000 छात्र एवं 200 शिक्षक यहाँ बात थें। हर्षवर्धन तथा कुमारगुप्त ने इसी नगरी को विकसित करने में मुख्य भूमिका निभाई नालंदा के प्रथम पाल एवं सेन वंश के पारस्परिक संघर्षों के कारण प्रारंभ हो गया। नालंदा में 1951 में एक भव्य संग्राहलय का निर्माण भी कराया गया है। नालंदा स्थित है नव नालंदा महाविहार राज्य में पाली सनाकोत्तर शोध का मुख्य स्थान है।

बिहारशरीफ–नालंदा के पास ही बिहार शरीफ में मखदूम साहब का दरगाह एवं वार्षिक उर्स का आयोजन राष्ट्रीय एकता का बेहतरीन उदाहरण है। इसमें सभी धर्म लंबी भाग लेते हैं इस नगरी में मालिक इब्राहिम वया का मकबरा भी है।

राजगीर–प्राचीन काल में राजगीर को राज्य ग्रह कहते थे। यह हिंदू, बौद्ध एवं जैन धर्म का पूज्य तीर्थ स्थल है। यहाँ भगवान् बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात् सतवर्णी गुफाओं में बौद्ध परिषद की बैठक हुआ करती थी। यहाँ पास में गृधकुट पर्वत पर भगवान् बुद्ध ने मौर्य राजा बिंबिसार को बौद्ध धर्म की दीक्षा दी राजगीर में ही राजा जरासंध का अखाड़ा भी है, राजा जरासंध शक्तिशाली शासक था। जिसका अंततः पांडवों ने नाश किया। राजगीर में गर्म पानी का सोता भी है, जहाँ लोग दूर–दूर से पूजा अर्चना करने आते हैं। राजगीर के अन्य दर्शनीय स्थलों विश्व शांति स्तूप, जीविकाभ्रमण, सोन भंडार गुफा, मनियार मठ, वेणुवन, मखदूम साहेब

का हुजरा और अनेक कुण्ड है। राज्य पर्यटन विभाग द्वारा वार्षिक राजगीर महोत्सव का आयोजन भी किया जाता है।

पावापुरी–राजगीर जाने का मार्ग पर पटना से 80 किलोमीटर की दूरी पावापूरी है, जिसे अबपूरी भी कहा जाता है। यहाँ भगवान् महावीर ने पांचवीं शताब्दी में अंतिम सांस ली जिस स्थल पर इनका अंतिम संस्कार किया गया।

सासाराम–सासाराम में प्रसिद्ध पठान सुल्तान शेरशाह सूरी का अंतिम विश्राम स्थल है। सासाराम में शेरशाह तथा उसके पिता हसन खान सूरी का मकबरा भारत के पठान निर्माण कला का उत्कृष्ट नमूना है। सासाराम में ही शेरशाह ने प्रशासन एवं प्रबंधन व्यवस्था में अनेक प्रयोग किए जो बाद में चलकर शेरशाह के प्रशासनिक एवं राजस्व सुधार का आधार बनी। यहाँ प्रसिद्ध कैमूर पहाड़ियाँ भी हैं जहाँ 1957–58 में अंग्रेजों के विरूद्ध संघर्ष में बाबू अमर सिंह का ठिकाना भी बनी थी।

उद्देश्य–चयनित विषय बिहार पर्यटन उद्योग की वर्तमान स्थिति मगध प्रमंडल के संदर्भ में तत्कालीन संभावनाएँ आधारित है। यह बिहार राज्य के आर्थिक सामाजिक, सांस्कृति एंतिहासिक धार्मिक धरोहर सहज करते हुए पर्यटन उद्योग के विभिन्न विकासात्मक अध्ययन हेतु प्रस्तुत किया गया है।

परिकल्पनाः

1. बिहार राज्य के मगध प्रमंडल का आर्थिक विकास पर्यटन उद्योग, की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण कर निष्कर्ष प्राप्त किया गया।
2. बिहार राज्य पर्यटन उद्योग मगध प्रमंडल के संदर्भ में वर्तमान विधि व्यवस्था को प्राप्त किया गया।
3. विकासात्मक स्थिति पर्यटन उद्योग का विस्तार प्राप्त किया गया।

साहित्य की समीक्षाः

1. Bihar State Tourism Development Corporation, द्वारा प्रदर्शित वेबसाइट एवं संबंधित पाठ्यवस्तु एवं वार्षिक पत्रिका द्वारा समुचित आंकड़ा प्रस्तुत करने का प्रयास किय गया है।
2. बिहार के मगध प्रमंडल विशेषकर नालंदा एवं गया क्षेत्र के वर्तमान राज्य सरकार द्वारा पर्यटन उद्योग विकास एवं कार्य को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

परिणाम एवं विश्लेषणः–बिहार पर्यटन उद्योगों के विकास की अच्छी संभावना है। उद्योगों के लिए न्यूनतम अवसर, पर्यटन आर्थिक विकास का सबसे अच्छा तरीका हो सकता है और राज्य में रोजगार सृजन। बाधाओं और खतरों को कम करने अथवा की आवश्यकता है सुशासन का विकास करना। राज्य में गंतव्य अभी भी अस्पष्टीकृत और कारण हैं। पर्याप्त बुनियादी सुविधाओं का अभाव उन्हें पूरा

करने से वंचित करता है, और आराम की उनकी इच्छा। इससे पर्यटक के रूप में राज्य की धारणा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है गंतव्य। यह उम्मीद की जाती है कि यदि बुनियादी ढंचे में सुधार किया जाए और अधिक की शुरूआत की जाए साइट और भ्रमण बिंदु पर गतिविधियाँ ठहरने की अवधि बढ़ा सकती हैं और अधिक लुभा सकती हैं पर्यटकों को। व्याज पहुँच के कई स्थानों के लिए एक बड़ी समस्या है जहाँ दूसरों की स्थिति के लिए सड़कों के विशाल की जरूरत है।

निष्कर्षः—पर्यटन उद्योगों के विकास हेतु, विभिन्न पर्यटन स्थलों के प्रचार के लिए ठोस कदम उठाए जाने की आवश्यकता है। अधिकांश मामलों में, यात्रा के लिए पर्यटक का प्राथमिक कारण पर्यटन नहीं होता है किन्तु, व्यापार एवं आवश्यकता हेतु पर्यटन में बदल जाता है। अतः पर्यटन विकास जागरूकता पैदा करने के लिए एक ही ध्यान विपणन गतिविधि के लिए अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू यात्रा व्यापार, बेहतर पहुँच को प्रोत्साहित करने और स्थानीय यात्रा को सक्षम करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय साझेदारों के साथ संबंध बनाने के लिए व्यापार एक अच्छा विकल्प है। इसके लिए बिहार सरकार एवं नीजि एजेंसियों को एक नियमित रूप से ब्रांड की छवि को चलाये जाना चाहिए, समाचार—योग्य प्रेस विज्ञप्ति का कार्यक्रम, प्रमुख उत्पाद से संबंधित उच्च प्रोफाइल घटनाओं को बढ़ावा देना, एवं समूहों और होस्टिंग पत्रकारों तथा यात्रा लेखकों के माध्यम से करना चाहिए। पर्यटन बोर्ड के साथ निकटता से सहयोग करें और इसके विदेशी जनसंपर्क सलाहकार की एक श्रृंखला तैयार करने के लिए एक विज्ञापन एजेंसी नियुक्त करें ताकि प्रत्येक उत्पाद क्लस्टर के लिए और एक घरेलू अवकाश अभियान के लिए शानदार ब्रांडेड विज्ञापन द्वारा बिहार के पर्यटन उद्योग को और भी बढ़ावा एवं नई संभावनाएँ प्रस्तावित हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. अंगत्तर निकाय नालंदा देवनगरी बिहार 1960.
2. बख्शी, एस० और चतुर्वेदी, आर० (2007)। युगों से बिहार स्वरूप एंड संस, नई दिल्ली, 1, 2—5.
3. कॉक्स, सी०आर०एम० (2011): क्षेत्रीय पर्यटन स्थलों के लिए सर्वश्रेष्ठ अभ्यास विपणन। 'यात्रा और पर्यटन विपणन' जर्नल। 28, पृ०—524—540.
4. हडसन, एस० और रिची, बी० (2009)। एक यादगार गंतव्य अनुभव ब्रांडिंग—का मामला 'ब्रांड कनाडा'। पर्यटन अनुसंधान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 11, पृ०—217—228.
5. पटना विश्वविद्यालय ''कल और आज'' पाटलिपुत्र एवं नालंदा बौद्धिक ग्रंथ, 'द हिंदुस्तान टाइम्स' पटना—मार्च. 9 1996.

6. गोल्डी 2018 'बिहार के एतिहासिक पर्यटन स्थल', नेटिव प्लानेट।
7. डॉक्टर ए.के. रैना, ''पर्यटन उत्पादन एवं प्रबंधन'', कनिष्क पब्लिशर नई दिल्ली।
8. विमल कुमार कपूरः ''पर्यटन भूगोल'', विश्व भारती पब्लिकेशन—नई दिल्ली।
9. जगमोहन नेगी एवं गौरव मनोहरः ''पर्यटन मार्केटिंग''।
10. डॉक्टर पापिया दास गुप्ता ''विकास पर्यटन एक अध्ययन'', मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल।
11. ''बिहार एक परिचय'' डॉक्टर कपूर 1989; कॉलेज बुक डिपो—जयपुर।
12. टूरिज़्म मैनेजमेंट बिहार समाचार सूचना एवं जनसंपर्क विभाग बिहार सरकार मार्च 2018—19।
13. बिहार आर्थिक सर्वेक्षण 2018—19.
14. Annual Report (2018–2019): Ministry of Tourism Government of India.
15. Annual Report (2018–2019): Ministry of Tourism government of Bihar, March 2019.
16. स्टोक्स, आर। (2008)। टूरिज्म स्ट्रेटजी मेकिंगः इनसाइट्स टू द इवेंट्स टूरिज़्म डोमेन पर्यटन प्रबंधन। 29, 252—262।